संत श्री आशारामजी आशरम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०२२
वर्ष : ३२ अंक : ६ (निरंतर अंक : ३६०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

...वह बेहोश हो गया, उसने देखा कि तुलसी के पौधे से एक दिव्य पुरुष प्रकट हुए और बोले : "मैं हूँ नारायण, तुलसी के पौधे में मेरा निवास है।" पढ़ें पृष्ठ १८

तुलसी पूजन दिवस : २५ दिसम्बर

इस पर्व द्वारा पूज्य बापूजी ने पुनः घर-घर तुलसी की स्थापना करायी, इसके महत्त्व को बताकर सहज में स्वस्थ रहना सिखाया।

सेवा के लिए यह सुवर्ण-युग है २१

सत्संग की बातें, झूठे आरोपों की सच्चाई प्रकट करने की बातें सोशल मीडिया और ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन, लोक कल्याण सेतु द्वारा समाज तक पहुँचाने में लोग लगे हैं, मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है और होगी भी। - पूज्य बापूजी

मकर संक्रांति का महत्त्व और लाभान्वित होने की विधि १४

मंगलमयी, सुख-समृद्धिदायी गौ-सेवा १३

वजन बढ़ाने/घटाने के इच्छुकों हेतु खुशखबरी ! शरीर सुडौल बनाने के अचूक उपाय ३०

विकराल स्वास्थ्य-समस्या : कृमिरोग ३२ | जहाँ कोई दवा काम न करे वहाँ... २९

पूज्य बापूजी का विश्वमानव को उपहार : विश्वगुरु भारत कार्यक्रम

पूर्वकाल में घर-घर में तुलसी, गीता, गौमाता - भारतीय संस्कृति की ये धरोहरें विद्यमान होती थीं, जिससे लोग स्वस्थ, प्रसन्न व शांत रहते थे। लेकिन धीरे-धीरे इन्हें घरों से बेघर कर दिया गया जिसके कारण समाज रोगग्रस्त व अशांत होने लगा। वर्तमान समय में इस अशांति ने ऐसा विकराल रूप धारण किया कि वर्ष के अंतिम दिनों में होनेवाली आपराधिक प्रवृत्तियों, आत्महत्याओं में विशेषरूप से बढ़ोतरी होने लगी। इसका प्रमुख कारण था २५ दिसम्बर से १ जनवरी के बीच समाज में बढ़ती दुष्प्रवृत्तियाँ, जैसे मांसाहार, शराब-सेवन आदि।

भूले-भटके, नीरस समाज को सच्ची राह मिले व जनजीवन में सरसता, सात्त्विकता, आरोग्य, प्रभुप्रीति आदि का प्रादुर्भाव हो इस उद्देश्य से २०१४ में ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी ने 'विश्वगुरु भारत कार्यक्रम' का अनुपम उपहार समाज को दिया।

पूज्य बापूजी के सब प्रकल्पों का अंतिम लक्ष्य यह है कि जीवात्मा अंतरात्मा-परमात्मा के रस को पा ले और अपने सच्चिदानंदस्वरूप को जानकर मुक्त हो जाय। २५ दिसम्बर से १ जनवरी तक 'विश्वगुरु भारत कार्यक्रम' के पूज्यश्री के आवाहन के फलस्वरूप करोड़ों लोग 'तुलसी पूजन दिवस' सपरिवार मनाकर प्रसन्नचित्त हो रहे हैं व स्वास्थ्य-लाभ पा रहे हैं, हवन द्वारा पवित्र आभामंडल बना रहे हैं, गौ-गंगा-गीता जागृति यात्राओं से गाँव-गाँव, शहर-शहर में सुख-समृद्धि व आरोग्य प्रदायिनी गौमाता की सेवा-पूजा के लाभ, गीता के दिव्य ज्ञान एवं गंगा के माहात्म्य आदि का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। योग प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से दवाइयों की गुलामी और चीर-फाड़ के बिना रोगमुक्त जीवन की ओर चल रहे हैं। व्यसनमुक्ति अभियान के द्वारा युवा पीढ़ी को विनाश के मार्ग पर जाने से बचा रहे हैं, भूले-भटकों को सच्चा रास्ता दिखा रहे हैं। अध्यात्म मार्ग के पथिक अंतर्मुख हो 'ध्यान योग शिविरों' में अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगा रहे हैं। यह सब भगीरथ कार्य पूज्यश्री के संकल्प से, उनकी प्रेरणा और कृपाशक्ति से उनके असंख्य प्यारे, भगवान के दुलारे कर रहे हैं। मानवता उनकी आभारी है, उनकी ऋणी है। आइये, हम सब भी पूज्यश्री के इस दैवी कार्य से जुड़कर अपना और अपने सम्पर्क में आनेवालों का जीवन धन्य करें तथा शुद्ध ज्ञान और आत्मसुख रूपी परम लाभ को प्राप्त कर लें। जब किसीकी सेवा के फलस्वरूप हमारा जीवन परिवर्तित हुआ है तो हम भी विश्वगुरु भारत के ज्ञान का परचम विश्वभर में व्यापकरूप से फहराने के इस महायज्ञ में कोई-न-कोई सेवा खोज लें।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३२ अंक : ६ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३६०
प्रकाशन दिनांक : १ दिसम्बर २०२२
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. २०७९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'RishiPrasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ **परिप्रश्नेन** ✻ पूज्य बापूजी के साथ आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी ४
❖ **आखिरी बात** ६
❖ **मंगलमय संदेश**
✻ स्मृति योग और प्राणायाम ९
✻ ऐसा करोगे तो भगवान तुम पर बहुत खुश हो जायेंगे १६
❖ **पर्व मांगल्य**
✻ ईश्वर का वरदान : संजीवनी तुलसी ११
✻ मंगलमयी, सुख-समृद्धिदायी गौ-सेवा १३
✻ मकर संक्रांति का महत्त्व और लाभान्वित होने की विधि १४
❖ **आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु** १५
❖ **ऐसे दुःख पर करोड़ों-करोड़ों सुख कुर्बान** १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✻ तुलसी में भगवान नारायण का निवास १८
✻ इससे तन, मन, बुद्धि निर्मल व सात्त्विक हो जायेंगे १९
✻ बुरे और अच्छे संकल्पों का फल १९
❖ **आत्म-खोज**
✻ उत्तम स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है ईश्वरीय शक्ति का अवलम्बन २०
- परमहंस योगानंदजी
❖ **सेवा के लिए यह सुवर्ण-युग है** २१
❖ **अनमोल है सत्संग !** २३
❖ **मैं भक्तन को दास** २४
❖ **भक्तों के अनुभव** ✻ दीक्षा से मिटा थायरॉइड का रोग २५
❖ **स्वास्थ्य संजीवनी** ✻ रोग का रहस्य और निरोगता का मूल २६
❖ **काव्य गुंजन** ✻ जीवन व्यर्थ गँवाते क्यों हो - संत पथिकजी २७
❖ **इनकी तुलना किससे करें ?** - संत एकनाथजी २७
❖ **स्वास्थ्य प्रसाद** ✻ सर्दी में पुष्टिदायी प्रयोग २८
✻ जहाँ कोई दवा काम न करे वहाँ... २९
✻ वजन बढ़ाने/घटाने के इच्छुकों हेतु खुशखबरी ! ३०
✻ विकराल स्वास्थ्य-समस्या : कृमिरोग ३२
❖ **आयुर्वेदामृत** ✻ सम्पूर्ण स्वास्थ्य का आधार : आयुर्वेद ३१
❖ **साधनानिधि** ✻ जीवन को साधनामय बनाने की कला ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि — बात सिर्फ खबर की — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

अराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे जम्मू में JK Cable

Asharamji Bapu | सेवाकार्य भी Asharamji Ashram | Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु) Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

आखिरी बात

– पूज्य बापूजी

एक बार एक ब्रह्मवेत्ता महापुरुष को उनके शिष्य-समुदाय ने घेर लिया एवं प्रार्थना की : ''गुरुदेव ! हम सब आपके दर्शन तो कई बार करते हैं लेकिन अब हमें प्रभु-तत्त्व का साक्षात्कार करना चाहिए – यह हम आपके सत्संग-प्रसाद से समझते हैं, मानते हैं । अतः अब एक बार आप हमें आखिरी बात सुनाने की कृपा कर दीजिये ।''

गुरु बोले : ''हम तो ढूँढ़ते ही रहते हैं कि आखिरी बात सुननेवाला कोई मिल जाय । लगता है तुम लोगों को भगवान ने ही भेजा है ।''

''गुरुदेव ! अब आप आखिरी बात सुना ही दीजिये ।''

''जिस किसीको आखिरी बात सुननी है वह मेरे जन्मदिन पर आ जाय ।''

''किस जन्मदिन पर ?''

''जिस दिन मेरे गुरुदेव ने मुझे आत्मसाक्षात्कार कराया था, जिस दिन गुरुरूप में मेरा जन्म हुआ था उस दिन तुम लोग आ जाना ।''

चारों तरफ खबर फैल गयी कि अपने आत्मसाक्षात्कार के दिन गुरुदेव आखिरी बात बतानेवाले हैं । अतः दूर-दराज से लोग गुरु-आश्रम में एकत्र होने लगे । कई विद्वान, पंडित एवं शास्त्रज्ञ भी आये । इस प्रकार वहाँ बड़ी भीड़ जमा हो गयी । बड़े-बड़े मंडप बन गये । किंतु उन महापुरुष को मानो इन सबसे कोई लेना-देना ही नहीं था । वे तो अपनी कुटिया से सहज-स्वाभाविक मस्ती में बाहर निकले ।

'सद्गुरु महाराज की जय !...' इस जयघोष से गगनमंडल गूँज उठा । जयघोष के बाद दो-चार प्रतिनिधि साधकों ने आगे बढ़कर कहा : ''गुरुदेव ! आज वही दिन है जिस दिन आप आखिरी बात सुनानेवाले हैं ।''

गुरु : ''ठीक है, अच्छा हुआ मुझे याद दिला दिया । आज आखिरी बात सुनानी है । सब लोग तैयार होकर बैठ जाओ ।''

गुरु : ''ठीक है, अच्छा हुआ मुझे याद दिला दिया । आज आखिरी बात सुनानी है । सब लोग तैयार होकर बैठ जाओ ।''

सब शांत होकर बैठ गये ताकि गुरुदेव की आखिरी बात का एक शब्द भी कहीं छूट न जाय । आज तो मानो कानों को भी आँखें फूट निकलीं कि 'हम सुनेंगे भी और देखेंगे भी ।' और मानो आँखों को कान फूट निकले कि 'हम निहारेंगी भी और सुनेंगी भी ।'

इतने में वे महापुरुष मंच पर आये और लेट गये । १०... २०... ३०... ४०... ५० मिनट हो गये, घंटा... दो घंटा हो गये... शिष्यों ने सोचा कि 'पता नहीं गुरुदेव को क्या हो गया है !'

लल्लू-पंजू शिष्य तो रवाना हो गये लेकिन जो जिज्ञासु थे उन्होंने सोचा कि 'बैठे-बैठे तो गुरुदेव को कई बार सुना है, आज वे लेट गये हैं तो लेटे-लेटे ही कुछ-न-कुछ कहेंगे ।'

इस प्रकार सब अपनी-अपनी मति एवं भावना के अनुसार विचारने लगे । फिर उनमें से भी कुछ लोग ऊबकर चले गये ।

इस प्रकार लगभग ४ घंटे व्यतीत हो गये । अब कुछ गिने-गिनाये लोग ही बचे । तब संत उठे । उन्हें उठा हुआ देखकर प्रतिनिधि शिष्यों ने कहा : ''गुरुदेव ! आज तो आपने बहुत देर तक आराम किया । अब तो चारों ओर लोग आपका और हमारा मखौल उड़ायेंगे कि 'अच्छी आखिरी बात सुनायी... ।' गुरुदेव ! आपने तो कुछ सुनाया ही नहीं वरन् आराम करने लगे । आप कुटिया में

दो कुंजियाँ जो खोल देंगी आपके अंदर का खजाना

स्मृति योग और प्राणायाम - पूज्य बापूजी

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना
नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥

'तर्क की कहीं स्थिति नहीं है, श्रुतियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं, एक ही ऋषि नहीं हैं कि जिनका मत प्रमाण माना जाय तथा धर्म का तत्त्व गुहा में निहित है अर्थात् अत्यंत गूढ़ है अतः जिससे महापुरुष जाते रहे हैं वही (सच्चा) मार्ग है।'

(महाभारत, वन पर्व : ३१३.११७)

महापुरुष जिस रास्ते से गये वह सर्वोपरि है। सद्गुरु हयात मिल जायें तो वे आपका आत्मसाक्षात्कार का काम बना देते हैं; मेरा काम भी मेरे सद्गुरु की कृपा से ही हुआ।

पूज्य बापूजी का मंगलमय संदेश

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं :

तन सुखाय पिंजर कियो, धरे रैन दिन ध्यान।
तुलसी मिटे न वासना, बिना विचारे ज्ञान ॥

स्मृति योग के बिना पूर्णता नहीं

दुनिया के बड़े-बड़े बुद्धिमान, ब्रह्मवेत्ता के आगे बबलू हैं। प्रत्युत्पन्न मति (तत्काल सही जवाब या प्रतिक्रिया देने में सक्षम मति), यह-वह... सब ठीक है अपनी जगह पर किंतु यह स्मृति तो सर्वोपरि है। प्रत्युत्पन्न मति के धनी थे बीरबल परंतु अकबर के गुलाम बने लेकिन जिसको आत्मस्वरूप की स्मृति है उनके आगे अकबर तो क्या बड़े-बड़े चक्रवर्ती भी दास बन जाते हैं, इन्द्रदेव उनके आगे नतमस्तक होते हैं, उनके शिष्यों का भी सम्मान करते हैं। अब और क्या कहना !

अर्जुन बुद्धिमान तो थे, बड़े-बड़े लोग बुद्धिमान होते हैं पर निर्दुःख नहीं हो सकते, निर्भय नहीं हो सकते, निर्मोह नहीं हो सकते, निःशोक नहीं हो सकते। श्रीकृष्ण के चतुर्भुज रूप के दर्शन, विश्वरूप दर्शन होने के बाद भी उनके प्रेमपात्र अर्जुन को भी जब तक स्मृति योग नहीं हुआ तब तक पूर्णता नहीं मिली। जब स्मृति आयी तब कहीं अर्जुन को **'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...'** हो गया।

तो आपको स्वरूप-स्मृति तक पहुँचना है। मेरे गुरुदेव वहाँ तक पहुँचे। स्मृति इतनी प्रभावशाली होती है कि बुद्धि उसका नौवाँ हिस्सा होती है बस ! तो आपका श्रुति और स्मृति का ज्ञान ऐसा हो कि वह आपको आत्मसाक्षात्कार तक पहुँचा दे।

...तो विश्व का जल्दी भला हो जायेगा !

इस बार के दिवाली शिविर की ऋषि दर्शन (अंक क्र. १३१) बच्चों को जरूर दिखाओ और यह श्रुति, स्मृति का खजाना पाने के लिए बच्चों को उत्साहित करो। बच्चों को यह वचन पक्का कराओ और आप भी यही प्रार्थना करो कि

हे परमेश्वर ! हे अंतर्यामी ! हे सद्गुरुदेव !...

बुलबुल को गुल[1] पसंद है, गुल को पसंद है बू[2]।
किसीको कुछ भी पसंद हो, मुझे सदा पसंद रहे तू ॥

भले रोना पड़े तो रो के पुकारो, प्यार करके पुकारो : 'हे आत्मदेव ! हे अंतर्यामी ! आपकी स्मृति रहे। हे मेरे गुरुदेव ! आपकी स्मृति रहे।

१. फूल २. सुगंध

ईश्वर का वरदान : संजीवनी तुलसी

हिन्दू धर्म में तुलसी को उसके धार्मिक, वैज्ञानिक और ज्योतिषीय गुणों के कारण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । तुलसी की महिमा कई शास्त्रों ने गायी है । आयुर्वेद व विज्ञान ने तुलसी को पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण माना है ।

कैसी अद्भुत है तुलसी की महिमा !

पूज्य बापूजी के सत्संग वचनामृत में आता है : ''तुलसी रोग के कीटाणुओं को नष्ट करती है, भूख लगाती है, हृदय व दिमाग को बहुत फायदा करती है; मानो यह ईश्वर की तरफ से आरोग्य की संजीवनी है संजीवनी ! मेरे को तो बहुत फायदा हुआ ।

तुलसी के पत्ते ऑक्सीजन देते हैं । सुबह-सुबह तुलसी के पौधे में १ लोटा पानी डालने व तुलसी का दर्शन करने से सुवर्णदान का फल मिलता है, हृदय में आनंद आता है । यमदूत तकलीफ नहीं करते, मरने के बाद व्यक्ति भगवान के धाम में जाता है ।

तुलसी पूजन दिवस : २५ दिसम्बर

तुलसी के ५ पत्ते चबाकर पानी पी लें, दाँतों में तुलसी के पत्तों के कण रह न जायें इसका ध्यान रखें । इससे पेट की तकलीफें, कैंसर की बीमारी नहीं होती और पाप मिट जाते हैं । बच्चों को स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिए प्रतिदिन तुलसी के ५ पत्ते खाने चाहिए (रविवार, अमावस्या, पूर्णिमा को न खायें) । कई बच्चों को फायदा हुआ है । ८०० बीमारियों को ठीक करने की ताकत तुलसी में है ।

घर में कलह हो तो एक पात्र में पानी के साथ थोड़े तुलसी के पत्ते रखकर आशारामायण का अथवा गुरुगीता का पाठ करो फिर घर के सब लोग भगवन्नाम का कीर्तन करके जोर से हास्य-प्रयोग करो और वह तुलसीवाला पानी घर में छिड़को तथा सब लोग थोड़ा-थोड़ा पियो तो घर के झगड़े शांत होने लगते हैं । घर के मुख्य द्वार पर तुलसी के २ पौधे हों, ४-१० हों तो और अच्छा है । ये धनात्मक ऊर्जा फेंकते हैं, ऋणात्मक ऊर्जा को दूर करते हैं, धनात्मक स्पंदन (vibration) देते हैं ।

पीपल का पेड़, तुलसी का पौधा और गाय - ये तो आरोग्य और सद्गति के लिए वरदान हैं । घर में तुलसी के पौधे रखने से रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) बढ़ती है, अपशकुन दूर होते हैं । तुलसी की जड़ की मिट्टी, गाय के पग की मिट्टी सुख-शांति लाती है । तुलसी की जड़ की मिट्टी पूरे शरीर में लगाकर कुछ देर बाद रगड़-रगड़ के स्नान करने से चर्मरोग दूर होते हैं, आरोग्यता बढ़ती है और त्वचा नरम व सुंदर हो के मन प्रफुल्लित होता है । तुलसी के पत्तों का तेल भी बहुत फायदा करता है ।''

तुलसी-पूजन की महिमा

शास्त्रों में तुलसी में समस्त देवताओं का निवास बतलाते हुए कहा गया है :

तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः ।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन् ॥

'तुलसी में सदैव समस्त देवता निवास करते हैं । अतः जो लोग उसकी पूजा करते हैं उनको अनायास ही सभी देवों की पूजा का फल मिल जाता है ।'

तुलसी उपनिषद् में आता है : 'हे तुलसी !

मंगलमयी, सुख-समृद्धिदायी गौ-सेवा

वैदिक संस्कृति में गायों को विशेष महत्त्व दिया जाता रहा है । गायों के पूजन, आदर-सत्कार एवं श्रृंगार हेतु जैसे गोपाष्टमी पर्व मनाया जाता है वैसे ही पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित 'विश्वगुरु भारत कार्यक्रम', जो २५ दिसम्बर से १ जनवरी तक होता है, उसमें गायों की सेवा, पूजन आदि का विशेष कार्यक्रम होता है ।

गाय पूजनीय क्यों ?

बृहत् पराशर स्मृति में आता है कि 'गाय के सींग की जड़ में ब्रह्मा, सींग के मध्य में विष्णु एवं शरीर में सारे देवता विद्यमान हैं ।'

विश्वगुरु भारत कार्यक्रम पर विशेष

ब्रह्मवैवर्त पुराण में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : 'गौओं के अंगों में समस्त देवता निवास करते हैं, उनके चरणों में समस्त तीर्थ और उनके गुह्य स्थानों (मल-मूत्र के स्थानों) में स्वयं लक्ष्मीजी निवास करती हैं । गौओं के खुर की धूल का जो मस्तक पर तिलक लगाता है वह तुरंत समस्त तीर्थों में स्नान करने का फल पाता है और पग-पग पर उसकी जय होती है ।

तीर्थस्थानों में जाकर स्नान-दान करने, ब्राह्मण-भोजन कराने, समस्त व्रत-उपवास, समस्त तप, महादान, श्रीहरि की आराधना करने, सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा, सम्पूर्ण वेदवाक्यों के स्वाध्याय तथा समस्त यज्ञों की दीक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य जिस पुण्य को पाता है, वही पुण्य केवल गायों को हरी घास खिलानेमात्र से पा लेता है ।'

महाभारत के दानधर्म पर्व में आता है कि 'गौएँ सम्पूर्ण प्राणियों की माता कहलाती हैं अतः उनकी सदैव पूजा करनी चाहिए ।'

गाय की महिमा समझें

पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है : ''जीवन में गीता और गाय का जितना आदर करेंगे उतने स्वस्थ, समतावान और आत्मवान बन जायेंगे । बच्चों को देशी गाय का दूध पिलाओ, गाय पालो, गायों की सेवा करो । जैसे वृद्ध माँ की सेवा करते हैं ऐसे बूढ़ी गायों की भी सेवा करो, इससे आपको कोई घाटा नहीं पड़ेगा ।

तो आप लोग गोदुग्ध से, गौ-गोबर से, गोमूत्र से स्वास्थ्य-लाभ उठाइये । कसाईखाने में गाय जाय उसकी अपेक्षा गाय पालना शुरू कर दो । गाय जहाँ बँधती है उधर टी.बी. और दमे के कीटाणु नहीं पनपते हैं । आपके घर-मोहल्ले में गाय का जरा चक्कर लगवा दो तो भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी की बाधा दूर हो जाती है ऐसा कहा गया है । गौ की पूँछ से श्रीकृष्ण को झाड़ दिया, बोलो ! 'हमारे कन्हैया को पूतना राक्षसी ने छुआ है तो कहीं उसकी नजर न लग जाय, उपद्रव न हो जाय, स्वास्थ्य न बिगड़ जाय' ऐसी आशंका से गोपियों ने श्रीकृष्ण का गाय की पूँछ से उतारा किया, गोमूत्र से स्नान कराया और गाय के गोबर से तिलक किया । भागवत में ऐसा वर्णन आता है ।

स्वास्थ्य के लिए गाय और आपके लिए गीता - इन दो चीजों का आप जितना सदुपयोग

(शेष पृष्ठ २० पर)

मैं भक्तन को दास

– पूज्य बापूजी

एक संत थे जिनका नाम था जगन्नाथदास महाराज । वे भगवान को प्रीतिपूर्वक भजते थे । वे जब वृद्ध हुए तो थोड़े बीमार रहने लगे । उनके मकान की ऊपरी मंजिल पर वे स्वयं और नीचे उनके शिष्य रहते थे । रात को एक-दो बार बाबा को दस्त लग जाते थे इसलिए खट-खट की आवाज करते तो कोई एक शिष्य आ जाता और उनका हाथ पकड़कर उन्हें शौचालय में ले जाता । बाबा की सेवा करनेवाले वे शिष्य जवान लड़के थे । एक रात जब बाबा ने खटखटाया तो कोई आया नहीं ।

बाबा बोले : ''अरे, कोई आया नहीं ! बुढ़ापा आ गया प्रभु !''

इतने में एक युवक आया और बोला : ''बाबा ! मैं आपकी मदद करता हूँ ।''

बाबा का हाथ पकड़कर वह उन्हें शौचालय में ले गया । फिर हाथ-पैर धुलाकर बिस्तर पर लेटा दिया । जगन्नाथदासजी ने सोचा : 'यह कैसा सेवक है कि इतनी जल्दी आ गया ! इसके स्पर्श से आज अच्छा लग रहा है, आनंद-आनंद आ रहा है ।'

जाते-जाते वह युवक लौटकर आया और बोला : ''बाबा ! जब भी आप ऐसे खट-खट करोगे न, तो मैं आ जाया करूँगा । आप केवल विचार भी करोगे कि 'वह आ जाय' तो मैं आ जाया करूँगा ।''

''बेटा ! तुम्हें कैसे पता चलेगा ?''

''मुझे पता चल जाता है ।''

''अच्छा ! रात को सोता नहीं क्या ?''

''हाँ, कभी सोता हूँ, झपकी ले लेता हूँ । मैं तो सदा सेवा में रहता हूँ ।''

जगन्नाथदास महाराज रात को खट-खट करते तो वह युवक झट आ जाता और बाबा की सेवा करता । ऐसा करते-करते कई दिन बीत गये ।

जगन्नाथदासजी सोचते कि 'यह लड़का सेवा करने तुरंत कैसे आ जाता है ?'

एक दिन उन्होंने उस युवक का हाथ पकड़कर पूछा कि ''बेटा ! तेरा घर कहाँ है ?''

''यहीं पास में ही है । वैसे तो सब जगह है ।''

''अरे ! तू क्या बोलता है, सब जगह तेरा घर है ?''

बाबा की सुंदर समझ जगी । उनको शक होने लगा कि 'हो-न हो, यह है तो अपनेवाला ही, जो किसीका बेटा नहीं किंतु सबका बेटा बनने को तैयार है, बाप बनने को तैयार है, गुरु बनने को तैयार है, सखा बनने को तैयार है... ।'

बाबा ने कसकर युवक का हाथ पकड़ा और पूछा : ''सच बताओ, तुम कौन हो ?''

''बाबा ! छोड़ो, अभी मुझे कई जगह जाना है ।''

''अरे ! कई जगह जाना है तो भले जाना लेकिन तुम कौन हो यह तो बताओ ।''

''अच्छा, बताता हूँ ।''

देखते-देखते भगवान जगन्नाथ का दिव्य

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२३)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवाधारी भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल कैलेंडर, पॉकेट कैलेंडर, डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

दीवाल कैलेंडर हिन्दी, देवभाषा संस्कृत, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़ एवं अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ८२३८०९१०११ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

शुद्ध हीरा-भस्मयुक्त

वज्र रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़ व तेजस्वी बनानेवाली हैं। ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं। मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। ये कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं।

पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना

शाहाबी खजूर

खजूर वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला है। यह शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर है। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला यह खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद है। खजूर का सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

उपरोक्त सभी गुणों से युक्त एवं विशेष मीठे, रसीले व मुलायम

कबकब खजूर

*** रोगप्रतिरोधक व पाचन शक्ति वर्धक * यकृत (liver), हड्डियों आदि के लिए बलप्रद * कब्ज आदि पेट की बीमारियों में अत्यंत हितकारी**

केसर व सफेद मूसली युक्त

पुष्टि कल्प

यह अनुभूत स्वादिष्ट कल्प पुष्टिकर तथा तेज, ओज, बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक है। संयम-ब्रह्मचर्य के पालन के साथ इसके सेवन से शरीर सुदृढ़ व सशक्त होता है।

दिव्य स्वर्णक्षार युक्त

पीयूष बल्य रसायन

यह गौ-पीयूष से प्राप्त तेजस्वी स्वर्णक्षार व अन्य अत्यंत गुणकारी पोषक तत्त्वों से युक्त होने से शक्ति, पुष्टि का दिव्य स्रोत है।

सौभाग्य शुंठी पाक

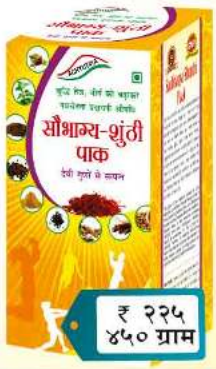

उत्तम बलवर्धक व वात, पित्त, कफ के रोग, बुखार (ज्वर), मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं अन्य अनेक रोग नाशक।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

ऋषि प्रसाद पहुँचाने का भगीरथ संकल्प लेने व साकार करनेवाले ये हैं पृथ्वी पर के देव !

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Dec 2022

कोलकाता

नारायणगढ़ (नेपाल)

सुलतानपुर (उ.प्र.)

वीरमगाम, जि. अहमदाबाद

इटावा (उ.प्र.)

काठमांडू (नेपाल)

कराड, जि. सातारा (महा.)

बिलौआ, जि. ग्वालियर (म.प्र.)

जालना (महा.)

छात्राओं के लिए सर्वांगीण उन्नतिकारक साबित हो रहे 'तेजस्विनी अभियान' की झलकें

बहादुरगढ़ (हरि.)

कैथल (हरि.)

सिहोर, जि. भावनगर (गुज.)

नीमराणा, जि. अलवर (राज.)

तलाजा, जि. भावनगर (गुज.)

भोपाल

रेवाड़ी (हरि.)

यमुनानगर (हरि.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित

आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

ऋषि दर्शन

(केवल ऑनलाइन संस्करण)

नूतन सदस्यता शुल्क : ● वार्षिक : ₹ १२० ● द्विवार्षिक : ₹ २४० ● पंचवार्षिक : ₹ ५००

'ई-ऋषि दर्शन' की ऑनलाइन सदस्यता हेतु लॉग ऑन करें : www.rishidarshan.org

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से ध्यान में दिव्य अनुभूतियों के गगन में उड़ान भरने हेतु

प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त तापी नदी-तट पर स्थित एवं ध्यान, जप, सत्संग के आध्यात्मिक स्पंदनों से ओतप्रोत

संत श्री आशारामजी आश्रम, सूरत में लगेगा १ साल का 'ध्यान योग शिविर'

(२०२२ में होगा शुभारम्भ, २०२३ में होगी पूर्णाहुति)

२५ दिसम्बर २०२२ से १ जनवरी २०२३ तक

✻ महिलाओं के लिए 'चलें स्व की ओर...' शिविर ✻ विद्यार्थी शिविर ✻ ऋषि प्रसाद प्रशिक्षण शिविर ✻ युवा सेवा संघ प्रशिक्षण

पूज्य बापूजी के दीर्घकालीन सान्निध्य से सुस्पंदित, साबरमती नदी-तट पर स्थित तपःस्थली अहमदाबाद आश्रम में

उत्तरायण ध्यान योग शिविर १५ से १९ जनवरी

ऋषि प्रसाद सेवाधारियों व श्री योग वेदांत सेवा समितियों की बैठक भी होगी। शिविरों का लाभ अवश्य लें और दूसरों को भी सूचित करें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी